

< ७५	भवनवासियोंमे उत्पन्न होनेवाले तिर्यचोका उपपाद सम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र साधिक पाच राजु क्यो नही होता इस शंकाका समाधान	२२६-२२७
७६	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोके वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरुपण	२२७
७७	मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोके वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सयुक्तिक निरुपण	२२८-२२९
७८	उक्त देवोके अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरुपण	२२९-३२३
७९	उपपादपदगत मिथ्यादृष्टि भवन वासी देवोके स्पर्शन क्षेत्रसम्बन्धी अनेक अपूर्व शंकाओका समाधान	२३०
८०	मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोके स्वस्थानादि पदोके स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरुपण	२३०-२३१
८१	उपपादकी अपेक्षा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमान कालमे व्याप्त करके स्थित व्यन्तरदेव अतीतकालमे कैसे तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागकी स्पर्श करते है, इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	२३१
८२	व्यन्तरोके प्रसंगोपात्त आवास स्थानोका निरुपण	२३२
८३	उपपादगत ज्योतिष्क देवोका स्पर्शनक्षेत्र	२३२-२३४
८४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३३-३२४
८५	सौधर्म ओर ईशान्यकल्पवासी देवोमे मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक	२३४-२३६

	गुणस्थानवर्ती देवोका स्पर्शनक्षेत्र	
८६	इन्द्रक श्रेणीबद्ध ओर प्रकीर्णक विमानोके विस्तारका निरूपण	२३४
८७	सौधर्म कल्पवासी देवोका स्पर्शन क्षेत्रदेवोके ओघस्पर्शनके समान क्यो है इसका सोपपत्तिक निरूपण	२३६
८८	सौधर्मकल्पवासी देवोका स्पर्शनक्षेत्र देवोके ओघस्पर्शनके समान क्यो है, इसका सोपपत्तिक निरूपण	२३६
८९	सनत्कुमारकल्पसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारो गुणस्थानवर्ती देवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३८-२३८
९०	आनतकल्पसे लेकर अच्युतकल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारो गुणस्थानवर्ती देवोके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२३८-२३९
९१	नवग्रैवेयकोके मिथ्यादृष्टि आदि चारो गुणस्थानवर्ती देवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३९
९२	नव अनुदिश ओर पांच अनुन्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोका स्पर्शनक्षेत्र २ ( इन्द्रियमार्गणा) २४०-२४६	२४०
९३	बादर,सूक्ष्म और पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२४०-२४२
९४	बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोका स्पर्शनक्षेत्र सामान्य लोक आदि तीन लोकोके संखातवे भाग क्यो है इस शंकाका समाधान	२४१
९५	सामान्य एवं पर्याप्त और वर्तमानकालिक स्पर्शन क्षेत्र	२४२
९६	उक्त तीनो प्रकारके विकलत्रय जीवोके अतीतकालिक स्पर्शन क्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२४३
९७	पंचेन्द्रिय और पंचन्द्रियपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोके वर्तमान तथा अतीतकालिक	२४४

	स्पर्शन क्षेत्रका सोपपत्तिक निरुपण	
९८	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२४५
९९	लब्धपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२४६
	३ ( कायमार्गणा )	२४७-२५५
१००	सामान्य तथा बादर पृथिवी कायिक जलकायिक अग्नि कायिक वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा इन्हीके अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक सूक्ष्मजलकायिक सूक्ष्मअगिकायिक सूक्ष्मवायुकायिक और इन्हीके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२४७
१०१	उक्त जीवोने तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र कैसे स्पर्श किया है यह बतलाते हुए आठों पृथिवीयोकी लम्बाई चौडाई और मोटाईका निरुपण	२४७-२४८
१०२	बादर तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोके वैक्रियिक समुद्धातसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक वर्णन	२४९-२५०
१०३	बादर पृथिवीकायिक जलकायिक अग्निकायिक और वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका तथा तदन्तर्गत शंका-समाधानोका सप्रमाण वर्णन	२५०-२५२
१०४	बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोका वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२५२-२५३
१०५	वनस्पतिकायिक निगोद तथा उनके बादर सूक्ष्म और पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२५३-२५४
१०६	त्रसकायिक और त्रकायिक पर्याप्त जीवोके मिथ्यादृष्टी आदि चौदह गुणस्थानो सम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रका निरुपण	२५४
१०७	त्रसकायिक लब्धपर्याप्त जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२५४-२५५
	४ ( योगमार्गणा )	२५५-२७१

१०८	पांचो मनोयोगो और पांचो वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीत-कालिक स्पर्शनक्षेत्र	२५५-२५६
१०९	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती पांचो मनोयोगी ओर पांचो वचन-योगी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२५६-२५७
११०	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तककाययोगी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२५८
१११	काययोगी सयोगिकेव्रली का स्पर्शनक्षेत्र तथा पृथक सूत्र द्वारा बतलानेका सयुक्तिक कारण-निरूपण	२५८-२५९
११२	औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२५९-२६०
११३	औदारिककाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२६०-२६१
११४	औदारिककाययोगी सम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२६१-२६२
११५	प्रमतसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके औदारिककाययोगी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२६२-२६३
११६	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका स्पर्शन क्षेत्र	२६३-२६४
११७	औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेव्रली तदन्तर्गत शंका-समाधान पूर्वक सोपपत्तिक निरूपण	२६४-२६५
११८	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोके वर्तमान और अतीत-कालिक स्पर्शनक्षेत्र सोपत्तिक निरूपण	२६६
११९	वैक्रियिककाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२६७-२६८
१२०	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२६८-२६९
१२१	आहारकाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी	२६९

	प्रमतसंयतोका स्पर्शनक्षेत्र	
१२२	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	269-270
१२३	कार्मणकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७०-२७१
१२४	कार्मणकाययोगी सयोगीकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र	२७१
	५ वेदमार्गणा	२७१-२७९
१२५	स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सयुक्तिक निरूपण	२७१-२७२
१२६	स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानके साथ निरूपण	२७२-२७४
१२७	स्त्रीवेदी ओर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शन क्षेत्र	२७४
१२८	स्त्री और पुरुषवेदी संयतासयतोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७४-२७५
१२९	प्रमतसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशामक और क्षपक गुणस्थान तक स्त्री और पुरुषवेदी जीवोका तदन्तर्गत विशेषताओके साथ स्पर्शनक्षेत्रका वर्णन	२७५-२७६
१३०	नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोके तदन्तर्गत शंका-समाधानके साथ स्पर्शनक्षेत्रका निरूपण	२७६
१३१	नपुंसकवेदी सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७६-२७७
१३२	सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके नपुंसकवेदी जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७७-२७९
१३३	अपगतवेदी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२७९
	६ ( कषायमार्गणा)	२८०-२८१
१३४	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके चारो कषायवाले जीवोका	२८०

	स्पर्शनक्षेत्र	
१३५	लोभकषायवाले सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपशामक और क्षपक जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८०
१३६	उपशान्तकषाय आदि अन्तिम चार गुणस्थानवाले अकषायी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८०-२८१
	७ ( ज्ञानमार्गणा)	२८१-२८५
१३७	मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मत्त्यज्ञानी तथा श्रुतज्ञानी जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२८१-२८२
१३८	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका समाधानपूर्वक निरूपण	२८२-२८३
१३९	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थानतकके मति श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२८३-२८४
१४०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मनः पर्ययज्ञानी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८४
१४१	केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोका स्पर्शनक्षेत्र	२८४-२८५
	८ संयममार्गणा	२८५-२८८
१४२	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके संयत जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८५-२८६
१४३	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके सामायिक और छेदोस्थापना संयमी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८६
१४४	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती परिहारविशुद्धि संयतोका स्पर्शनक्षेत्र	२८६
१४५	उपशामक और क्षपक सूक्ष्मसाम्परासंयमी जीवाका स्पर्शनक्षेत्र	२८७
१४६	अन्तिम चार गुणस्थानवर्ती यथाख्यातसंयमी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८७
१४७	संयमासंयमवाले जीवोका तदन्तर्गत शंका-समाधान साथ स्पर्शनक्षेत्र निरूपण	२८७

१४८	मिथ्यादृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती असयंत जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८८
	९ दर्शनमार्गणा	२८८-२९०
१४९	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवो का वर्तमान और अतीत कालिक स्पर्शनक्षेत्र	२८८
१५०	सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके चक्षुदर्शनी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	२८९
१५१	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोका स्पर्शन क्षेत्र	२८९
१५२	अवधिदर्शनी जीवोका स्पर्शन क्षेत्र	२८९
१५३	जीवोका स्पर्शन क्षेत्र केवलदर्शनी	
	१० लेश्यामार्गणा	२९०-३०१
१५४	कृष्ण नील और कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोका सोपपत्तिक स्पर्शनक्षेत्र	२९०
१५५	उक्त तीनो अशुंभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९१-२९२
१५६	देवोसे एकेन्द्रियोमे मारणा- न्तिक समुद्धात करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका तीनो अशुभ लेश्यासम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र यथाक्रमसे बारह बटे चौदह भाग ग्यारह बटे चौदह भाग और नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्यो नही पाया जाता इस शंकाका समाधान	२९२
१५७	कृष्ण नील और कापोतलेश्या वाले तथा एकेन्द्रियोमे मार णान्तिक समुद्धात करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यच और मनुष्योका स्पर्शनक्षेत्र क्रमशः बारह ग्यारह बटे चौदह और नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्यो नही पाया जाता इस शंकाका समाधान	२९२
१५८	तिर्याचगतिमे उत्पन्न होनेवाले देवोके तीनो अशुभलेश्या ओक उपपादपदसम्बन्धी क्रमशः ग्यारह और चौदह दश बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र क्यो नही पाया जाता इस शंकाका निरूपण	२९२
१५९	उक्त तीनो अशुभलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि	२९३-२९४

	और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोका सयुक्तिक स्पर्शनक्षेत्र	
१६०	तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९४-२९५
१६१	तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९५-२९६
१६२	तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोका वर्तमान और अतीत कालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९६-२९७
१६३	तेजोलेश्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्त संयतोका स्पर्शन क्षेत्र	२९७
१६४	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके पद्यलेश्यावाले जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९७-२९८
१६५	पद्यलेश्यावाले संयतासंयत जीवोका वर्तमान और अतीत अनागतकालसंबंधी स्पर्शनक्षेत्र	२९८
१६६	पद्यलेश्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोका सपर्शनक्षेत्र	२९९
१६७	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोका वर्तमान और अतीत अनागतकाल संबंधी स्पर्शनक्षेत्र	२९९-३००
१६८	शुक्ललेश्यावाले तिर्याच शुक्ल लेश्यावाले देवोमेक क्यो नही उत्पन्न होते है इस शंकाका समाधान	३००
१६९	उपपादपदपरिणत शुक्ललेश्या वाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोके तथा मारणान्तिकपदपरिणत शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोके देशोन छह बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शन क्षेत्रका सोपपतिक निरूपण	३००
१७०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली	३००-३०१

	गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	
	११ भव्यमार्गणा	३०१
१७१	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके भव्यजीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०१
१७२	अभव्य जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०१
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	३०२-३०६
१७३	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके सम्यक्त्वी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०२
१७४	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान क्षायिक सम्यक्त्वी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०२
१७५	उपपादपदगत असयत क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवोका स्पर्शन क्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागप्रमाण कैसे है इस शंकाका समाधान	३०२-३०३
१७६	संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके क्षायिकसम्यक्त्वी जीवोका सौपपतिक स्पर्शनक्षेत्र वर्णन	३०३-३०४
१७७	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमतसंयत गुणस्थान तकके वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०४
१७८	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती औपशमिकसम्यक्त्वी जीवका स्पर्शनक्षेत्र तथा उसके ओघसे समान कहनेमे उपस्थित आपत्तिका परिहार	३०४-३०५
१७९	संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तकके उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०५
१८०	सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोका पृथक पृथक स्पर्शनक्षेत्र	३०६
	१३ संज्ञिमार्गणा	३०६-३०७
१८१	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	३०६-३०७
१८२	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके संज्ञीजीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०६-३०७
१८३	असंज्ञी जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	

	१४ आहारमार्गणा	३०८-३०९
१८४	आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०८
१८५	आहारमार्गणाकी अपेक्षा उपपादपदका राजुप्रमाण आयाम नही पाया जाता अतः सर्वलोक प्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके अभाव होनेसे ओघपणा नही बनता है इस शंकाका समाधान	३०८
१८६	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकका स्पर्शनक्षेत्र	३०८
१८७	अनाहारक जीवोका स्पर्शनक्षेत्र	३०९
	<b>कालानुगम</b>	
	<b>१</b>	
	<b>विषयकी उत्थानिका</b>	३१३-३२३
१	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	३१३
२	कालानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद निरूपण	३१३
३	नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्य काल और भावकाल इन चार प्रकारके कालनिक्षेपोका सभेद स्वरूप-निरूपण	३१३-३१७
४	तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्य कालका स्वरूप और उसकी पुष्टिमे पंचास्तिकायप्राभृत, जीवसमास और आचारांगकी गाथाओका उल्लेख	३१४-३१६
५	द्रव्यकालके अस्तित्वको समर्थन करते हुए तत्वार्थसूत्रका सूत्रप्रमाण-निरूपण	३१६
६	प्रकृत जीवस्थान आदिमे द्रव्य कालके न कहनेका कारण	३१६
७	व्यवहारक कालके अस्तित्वकी पुष्टिमे पंचास्तिकायप्राभृतकी गाथाओका उल्लेख	३१७
८	प्रकृतमे नोआगमभावकालका प्रयोजन और उसके समय, आवली, मुहुर्त वर्ष आदि स्वरूप होनेका निरूपण	३१७
९	कालशब्दकी निरुक्ति और उसके पर्यायवाची नामोका निरूपण	३१७-३१८
१०	समय, आवली, उश्वासनिःश्वास स्तोकलव, नाली, मुहुर्त और दिवसके कालप्रमाणका सप्रमाण निरूपण	३१८
११	दिन और रात्रिसम्बन्धी तीस मुहुर्तोके नाम	३१८-३१९
१२	पक्षका प्रमाण और दिवसोके नाम	३१९

१३	मास,वर्ष और यूग आदिक स्वरुप	२२०
१४	निर्देश स्वामित्व आदि प्रसिद्ध छह अनुयोगद्वारासे कालका स्वरुप-निरुपण	३२०-३२२
१५	यदि काल एकमात्रमनुष्यक्षेत्रसे सूर्यमंडलमे ही अवस्थित है, तो उसके द्वारा छह द्रव्योके परिणाम कैसे प्रकाशित किये जा सकते है, शंका का समाधान	३२०
१६	देवलोकमे तो दिन-रात्रिरुप कालका अभाव है,फिर वहय पर कालका व्यवहार कैसे होता है इत्यादि कालसम्बन्धी अनेको शंकाओका अपुर्व समाधान	३२१
१७	निर्देशकी पर्यायवाची नाम बतलाकर दोनो प्रकारकेनिर्देशोकी सार्थकताका निरुपण	३२२-३२३
	२ ओघसे कालानुगमनिर्देश	३२३-३५७
१८	मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल निरुपण	३२३
१९	एक जीवकी अपेक्षा कालके तीन भेदोका सदृष्टात उल्लेख और प्रकृतमे सादि-सन्त कालकी अपेक्षा जघन्यकालका निरुपण	३२४
२०	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोको भी मिथ्यात्व गुणस्थानमे पहुचा कर उसका जघन्यकाल क्यो निरुपण	३२५
२१	एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट सादि-सन्त मिथ्यात्वकालका निरुपण	३२५
२२	अर्धपुदगलपरिवर्तनका स्वरुप बतलाते हुए पांच प्रकारके परिवर्तनोका नामोल्लेख कर द्रव्यपरिवर्तनका विशद स्वरुप निरुपण	३२५-३३६
२३	यदि जीवने आज तक भी समस्त पुदगल भोगकर नही छोडे है तो सव्वे वि पोगगला खलु इत्यादि सूत्र गाथाके साथ विरोध क्यो नही होगा इस शंकाका समाधान	३२६
२४	प्रथम समयमे गृहित पुदगल द्वितीय समयमे निर्जीण हो, अकर्मरुप अवस्थाको धारण कर पुनः तृतीय समयमे उसी जीवमे जाता है,यह कैसे जाना , इस शंकाका समाधान	३२७
२५	पुदगलपरिवर्तनकालके तीन प्रकारोका स्वरुप	३२८

२६	पुदगलपरिवर्तनके स्वरूपका बोधक यंत्र	३३०
२७	अगृहीत,मिश्र और गृहित संबंधी तीनों प्रकारके कालोंका सकारण अल्पबहुत्व निरूपण	३३१
२८	नोकर्मपुदगलपरिवर्तनके समान ही कर्मपुदगलपरिवर्तनके स्वरूपका और तत्सम्बन्धी विशेषताओका निरूपण	३३२
२९	क्षेत्र,काल,भव और भाव पुदगल परिवर्तनोका सूत्रगाथाओ द्वारा स्वरूप-निरूपण	३३३-३३४
३०	एक जीवकी अपेक्षा पांचो परिवर्तनवारोका अल्पबहुत्व	३३४
३१	पांचो परिवर्तनोका कालसंबन्धी अल्पबहुत्व	३३४
३२	सादि-सन्त मिथ्यात्वके कुछ कम अर्धपुदगलपरिवर्तन कालका निदर्शन	३३५
३३	सम्यक्त्वकी उत्पत्ति और मिथ्यात्वका विनाश, इन दोनो विभिन्न कार्योंका एक समय कैसे हो सकता है इस शंकाका समाधान	३३५
३४	मिथ्यात्व नाम पर्यायका है,वह पर्याय उत्पाद विनाशत्मक है, क्योंकि उसमे स्थितिका अभाव है और यदि उसकी स्थिति भी मानते है तो मिथ्यात्वके द्रव्यपना प्राप्त होता है इस शंकाका समाधान	३३६-३६७
३५	अनन्तका स्वरूप और उसके प्रमाणमे आर्षगाथाका उल्लेख	३४८
३६	व्ययसहित अर्धपुदगलपरिवर्तन आदि राशियोंके अनन्तपना किस अपेक्षासे है, इसका स्पष्टीकरण	३४८
३७	अक्षय अनन्त राशिका विवेचन	३३९
३८	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा सोपपत्तिक जघन्य कालनिरूपण	३३९
३९	उक्त जीवोके उत्कृष्ट कालका सयुक्तिक कालवर्णन	३४०
४०	एक जीवकी अपेक्षा सासादन सम्यग्दृष्टियोंके जघन्य कालका निरूपण	३४१
४१	उपशमसम्यक्त्वकालके अधिक माननेमे क्या दोष है इस शंकाका समाधान करते हुए सासादनगुणस्थानके कालका सप्रमाण निरूपण	३४१

४२	एकजीवकी अपेक्षा सासादन सम्यग्दृष्टियोके उत्कृष्ट कालका सप्रमाण निरुपण	३४२
४३	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्य काल	३४२-३४३
४४	अप्रमतसंयत जीव सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानको क्यो नही प्राप्त होते इस शंकाका समाधान	३४३
४५	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव अपना काल पुरा कर पीछे संयमको अथवा संयमासयमको क्यो नही प्राप्त होता इस शंकाका समाधान	३४३
४६	नाना जीवोकी अपेक्षासम्यग्मिथ्यादृष्टियोका उत्कृष्ट काल	३४४
४७	एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोके जघन्य कालका तदन्तर्गत शंका समाधानपूर्वक निरुपण	३४४
४८	एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोका उत्कृष्ट कालका सोपपत्तिक प्रतिपादन	३४५
४९	असयतसम्यग्दृष्टियोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल, तथा तत्सम्बन्धी अनेको शंकाओका समाधान	३४५-३४६
५०	एक जीवकी अपेक्षा असयतसम्यग्दृष्टियोके जघन्य कालका सनिर्देशका निरुपण	३४६-३४७
५१	एक जीवकी अपेक्षा असंयतसम्यग्दृष्टियोके जघन्य कालका तदन्तर्गत शंका समाधानपूर्वक सोपपत्तिक निरुपण	३४७-३४८
५२	संयतासंयत जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल	३४८
५३	एक जीवकी अपेक्षा संयतासयतोका जघन्य काल	३४९
५४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संयमा सयमको क्यो नही प्राप्त होतो इस शंकाका समाधान	३४९
५५	प्रमत और अपेक्षा सयतासयतोका उत्कृष्ट काल	३५०
५६	प्रमत और अप्रमतसंयतोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल निरुपण	३५०
५७	एक जीवकी अपेक्षा प्रमत अप्रमतसंयतोके जघन्य कालका सोपपत्तिक निरुपण	३५०-३५१
५८	एक जीवकी अपेक्षा प्रमत और	३५१

	अप्रमतसंयातोका उत्कृष्ट काल	
५९	चारो उपशामकोका नाना जीवोकी जघन्य काल	३५२
६०	अप्रमतसयतको अपूर्वकरण गुणस्थानमे ले जाकर और द्वितीय समयमे मरण कराके अपूर्वकरण गुणस्थानके एक समयकी प्ररुपणा क्यो नही की, इस शंकाका समाधान	३५२
६१	नाना जीवोकी अपेक्षा चारो उपशामकोके उत्कृष्ट कालका सोपपतिक निरुपण	३५२-३५३
६२	एक जीवकी अपेक्षा चारो उपशामकोका जघन्य काल	३५३-३५४
६३	एक जीवकी अपेक्षा चारो उपशामकोका उत्कृष्ट काल	३५४
६४	चारो क्षपक और अयोगिकेव्रलीका नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्य तथा उत्कृष्ट काल	३५४-३५५
६५	उक्त जीवोका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३५५
६६	सयोगिकेव्रली जिनका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल निरुपण	३५६-३५७
	३. आदेशसे काल प्रमाण-निर्देश १ गतिमार्गणा ( नरकगति )	३५७-३६३
६७	नारकी मिथ्यादृष्टी जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल निरुपण	३५७
६८	एक जीवकी अपेक्षा नारकी मिथ्यादृष्टियोका जघन्य और उत्कृष्ट काल	३५७-३५८
६९	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टी नारकियोका कालवर्णन	३५८
७०	असंयतसम्यग्दृष्टी नारकियोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल निरुपण	३५८-३५९
७१	सातो पृथिवियोके नारकियोका नाना और उत्कृष्ट कालोका प्रतिपादन	३६०-३६१
७२	सातो पृथिवियोका सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोका काल वर्णन	३६१
७३	सातो पृथिवियोके असंयत सम्यग्दृष्टि	३६१-३६३

	नारकियोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालोका सोपत्तिक निरूपण	
	( तिर्यचगति )	३६३-३७२
७४	तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना जीवकी अपेक्षा काल वर्णन	३६३
७५	एक जीवकी अपेक्षा तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोका जघन्य और उत्कृष्ट काल	३६३-३६४
७६	असख्यात पुद्गलपरिवर्तन इस वचनसे अनन्ताताकी उपलब्धि होती है अतः सूत्रमेसे अनन्त पद क्यो न निकाल दिया जाय इस शंकाका समाधान	३६४
७७	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यचोका काल प्रमाण	३६४
७८	असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यचोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३६५-३६६
७९	संयतासंयत तिर्यचोका नाना और एकजीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३६६
८०	पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त और योनिमती मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३६७-३६९
८१	पंचानवे पूर्वकोटियोकी पूर्वकोटी पृथक्त्वसंज्ञा कैसे हो सकती है, इस शंकाका समाधान	३६८
८२	लब्धपर्याप्तकोमे स्त्रीवेदकी संभवता असंभवताका विचार	३६९
८३	उक्त तीनों प्रकारके सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यचोका कालवर्णन	३६९
८४	उक्त तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यचोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोपत्तिक जघन्य और उत्कृष्ट काल	३६९-३७१
८५	उक्त तीनों प्रकारके संयतासंयत तिर्यचोका काल	३७१
८६	पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तक तिर्यचोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३७१-३७२
	( मनुष्यगति )	३७२-३८०
८७	मनुष्य मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि	३७२-३७३

	जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्टकालका सोपपत्तिक निरूपण	
८८	उक्त तीनों प्रकारके सासादन सम्यग्दृष्टि मनुष्योका नाना एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३७४-३७५
८९	उक्त तीनों प्रकारके सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३७५-३७६
९०	उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३७६-३७८
९१	उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योका संयतासयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तक काल निरूपण	३७८
९२	लब्धपर्याप्तक मनुष्योंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल ( देवगति )	३७९-३८० ३८०-३८७
९३	मिथ्यादृष्टि देवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८०
९४	सासादन और असयतसम्यग्दृष्टि देवोका काल	३८१
९५	असंयतसम्यग्दृष्टि देवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८१
९६	भवनवासियोसे लगाकार शतार सहस्त्रारकल्प तकके मिथ्यादृष्टि और असंयतासम्यग्दृष्टि देवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८२-३८४
९७	घातायुष्क सम्यग्दृष्टी ओर मिथ्यादृष्टि देवोका कालमे विशेषता	३८३
९८	उक्त देवोकी स्थिति बतलाने वाले कालसूत्रका और त्रिलोक प्रज्ञप्तिसूत्रका विरोध उद्धावन कर उसका परिहार	३८४
९९	भवनवासियोसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोका काल	३८५
१००	आनतकल्पसे लेकर नवग्रैवेयको तकके मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोका	३८५-३८६

	और एक जीपकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका निरूपण	
१०१	नौ अनुदिश और विजयादि चार अनुन्तर विमानोका असंयतसम्यग्दृष्टि देवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८६-३८७
१०२	सर्वार्थसिद्धि विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा काल निरूपण	३८७
	२ इन्द्रियमार्गणा	३८८-४०१
१०३	एकेन्द्रिय जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८८
१०४	बादर एकन्द्रिय जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३८८-३८९
१०५	कर्मस्थितिको आवलीके असंख्यातवे भागसे गुणा करने पर बादरस्थिति होती है इस परिकर्म वचनके साथ बतलाये गये बादर एकेन्द्रियोके एक जीवगत उत्कृष्ट कालका विरोध क्यो नही होगा इस शंकाका समाधान	३९०
१०६	बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३९०
१०७	क्षुद्रभवग्रहणका काल संख्यात आवलीप्रमाण होता है इस बातका सप्रमाण निरूपण	३९०-३९४
१०८	अन्तमुहुर्त भी संख्यात आवली प्रमाण होता है अतः अन्त मुहुर्त और क्षुद्रभवके कालमे कोई भेद नही मानना चाहिए इस शंकाका समाधान	३९२
१०९	बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोकी भवस्थिति असंख्यात वर्षप्रमाण क्यो नही होता है इस शंकाका समाधान	३९२
११०	यदि कोई जीव बादर एकेन्द्रियोमे उत्कृष्ट संख्यात वार या उसके संख्यातवे भागप्रमाण वार उत्पन्न हो तो असंख्यात वर्षप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोकी उत्कृष्ट भवस्थिति क्यो नही हो जायेगी इस शंका समाधान	३९३
१११	बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवोका नाना	३९३-३९४

	और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	
११२	सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३९४
११३	सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका तदन्तर्गत शंका समाधान पूर्वक निरूपण	३९४-३९५
११४	जब कि एक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके आयुर्कर्मकी स्थिति संख्यात आवली प्रमाण होती है तब संख्यात वार उनमे ही पुनःपुन उत्पन्न होनेवाले जीवकेदिवस पक्ष मास आदि प्रमाण स्थितिकाल क्यो नही पाया जाता इस शंकाका समाधान	३९५
११५	सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्धपर्याप्तक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका तदन्तर्गत अनेके शंका समाधानोके साथ निरूपण	३९६-३९७
११६	सामान्य विकलत्रय और पर्याप्तक विकलत्रय जीवोक एक और नाना जीवोके अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालोका तत्संबंधी अनेक शंका-समाधानोके साथ निरूपण	३९७-३८
११७	लब्धपर्याप्तक विकलत्रय जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल वा तत्संबन्धी शंका समाधान	३९८-३९९
११८	पंचन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	३९९-४००
११९	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक दोनो प्रकारके पंचेन्द्रिय जीवोका कालवर्णन	४००
१२०	पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तक जीवोका काल ३ कायमार्गणा	४००-४०१ ४०१-४०९
१२१	पृथिवीकायिक जलकायिक अग्निकायिक और वायुकायिक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका निरूपण	४०१-४०२
१२२	बादरपृथिवीकायिक, बादर जलकायिक	४०२-४०३

	बादरअग्निकायिक बादरवायूकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	
१२३	कर्मस्थितिसे किस कर्मकी स्थितिका अभिप्राय है दर्शन मोहनिय कर्मकी स्थितिको प्रधानता क्यो है इन शंकाओका समाधान	४०३
१२४	उक्त पांचो प्रकारके पर्याप्त स्थावर जीवोका नाना और उत्कृष्ट कालका पृथक पृथक निरूपण	४०३-४०४
१२५	उक्त पांचो प्रकारके लब्ध्यपर्याप्त स्थावर जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४०५
१२६	सूक्ष्म तथा पर्याप्तक और कायिक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा काल	४०५-४०६
१२७	वनस्पतिकायिक जीवोका काल	४०६
१२८	निगोदिया जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य जघन्य और उत्कृष्ट काल	४०६-४०७
१२९	बादरनिगोद जीवोका काल	४०७
१३०	त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोके और उत्कृष्ट कालोका तत्सम्बन्धी शंका समाधान पूर्वक निरूपण	४०७-४०८
१३१	सासादनसम्यग्दृष्टी गुणस्थानसे लगाकार अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोका काल	४०८
१३२	त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोका काल	४०८-४०९
	४ योगमार्गणा	४०९-४३७
१३३	पांचो मनोयोगी और पांचो वचनयोगी मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासयत प्रमतसंयत अप्रमतसंयत और सयोगिकेव्रली गुणस्थानवर्ती जीवोका नाना अपेक्षा काल निरूपण	४०९
१३४	एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोके जघन्य कालका योगपरिवर्तन गुणस्थानपरिवर्तन मरण और व्याधात इन चारके द्वारा सोदाहरण काल निरूपण	४०९-४१२
१३५	उक्त जीवोके उत्कृष्ट कालका वर्णन	४१२
१३६	पांचो मनोयोगी ओर पांचो वचनयोगी	४२१-४१३

	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका काल	
१३७	उक्त योगवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना जीव और जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४१३-४१४
१३८	पांचो मनोयोगी और पांचो क्षपकोका नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४१४-४१५
१३९	एक समयसम्बन्धी विकल्पोका गाथासूत्रद्वारा निरूपण	४१५
१४०	काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४१५-४१७
१४१	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके काययोगी जीवोका काल	४१७
१४२	औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवसम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट काल	४१७-४१८
१४३	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके औदारिककाययोगी जीवोका काल	४१८
१४४	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४१८-४१९
१४५	औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल	४२०-४२१
१४६	औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका सोदाहरण निरूपण	४२१-४३२
१४७	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका तत्सम्बन्धी अनेके शंकाओका समाधान पूर्वक निरूपण	४२३-४२४
१४८	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४२५-४२६

१४९	वैक्रियिककायोगी सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका पृथक पृथक काल निरूपण	४२६
१५०	वैक्रियिबमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका सोदाहरण तदन्तर्गत शंका समाधानपूर्वक निरूपण	४२६-४२९
१५१	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका सोदाहरण निरूपण	४२९-४३०
१५२	आहारककाययोगी प्रमत सयतोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४३१-४३२
१५३	आहारमिश्रकाययोगी प्रमत सयतोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४३२-४३५
१५४	कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और सोदाहरण उत्कृष्ट काल	४३३-४३५
१५५	तीन विग्रहवाली गति किन जीवोके होती है, यह बतलाकर तीन विग्रह करनेकी दिशाका निरूपण	४३४-४३५
१५६	कर्मणकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल	४३५-४३६
१५७	कर्मणकाययोगी सयोगिकेवलीका नाना और एक जीवकी जघन्य और उत्कृष्ट काल	४३६-४३६
	५ वेदमार्गणा	४३७-४४४
१५८	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४३७
१५९	स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका पृथक पृथक काल निरूपण	४३८
१६०	स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४३८-४३९
१६१	संयतासयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण	४३९-४४०

	गुणस्थानतकके स्त्रीवेदी जीवोका सोदाहरण काल	
१६२	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४०-४४१
१६३	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके पुरुषवेदी जीवोका काल	४४१
१६४	नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४१-४४२
१६५	नपुसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका पृथक पृथक काल निरूपण	४४२
१६६	नपुसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४२-४४३
१६७	संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके नपुसकवेदी जीवोका काल	४४३
१६८	अपगतवेदी जीवोका काल	४४४
	६ कषायमार्गणा	४४४-४४८
१६९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमतसंयत गुणस्थान तकके चारो कषायवाले जीवोके कालका कषायपरिवर्तन गुणस्थानपरिवर्तन और मरणकी अपेक्षा निरूपण	४४४-४४५
१७०	किस कषायसे मरा हुआ जीव किस गतिमे उत्पन्न होता इस बातका विवेचन	४४५
१७१	क्रोध मान और माया इन तीन कषायवाले आठवे और नवे गुणस्थानवर्ती उपशामकोका तथा लोभकषायवाले आठवे , नवे और दशवे गुणस्थानवर्ती उपधामकोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४६-४४७
१७२	उक्त कषाय तथा उक्त गुणस्थानवाले क्षपक जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४७-४४८
१७३	कषायरहित जीवोका काल निरूपण	४४८
	७ ज्ञानमार्गणा	४४८-४५१

१७४	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि तथा सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोका काल	४४८-४४९
१७५	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४४९-४५०
१७६	विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोका काल	४५०
१७७	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोका काल	४५०-४५१
१७८	अवधिज्ञानी संयातसयतोके एक जीवसम्बन्धी उत्कृष्ट कालकी विशेषताका निरूपण	४५०-४५१
१७९	प्रमतसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मनःपर्ययज्ञानी जीवोका काल	४५१
१८०	केवलज्ञानियोका काल निरूपण	४५१
	८ संयममार्गणा	४५१-४५३
१८१	प्रमतसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके संयतोका काल	४५१-४५२
१८२	प्रमतसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिर्वृत्तिकरण गुणस्थान तक सामायिक और छेदोस्थापना शुद्धिसंयतोका काल	४५२
१८३	परिहारविशुद्धिसंयमी प्रमत और अप्रमतसंयतोका काल	२४२
१८४	सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसयतोका काल	२४२
१८५	अन्तिम चार गुणस्थावर्ती यथा ख्यातिविहारशुद्धिसयतोका काल	४५३
१८६	सयतासयत जीवोका काल	४५३
१८७	असयत जीवोका काल	४५३
	९ दर्शनमार्गणा	४५३-४५५
१८८	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट उत्कृष्ट काल	४५३-४५४
१८९	निर्वृत्यपर्याप्तकोके समान सद्ध्यपर्याप्तकोमे चक्षुदर्शन क्यो नही होता इस शंकाका समाधान	४५४
१९०	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके चक्षुदर्शनी जीवोका काल	४५४

१९१	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोका काल	४५५
१९२	अवधिदर्शनी जीवोका काल	४५५
१९३	वेम्लज्ञानी जीवोका काल	४५५
	१० लेश्यामार्गणा	४५५-४७६
१९४	कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल निरूपण तथा तत्सम्बन्धी शंकाओका सयुक्तिक समाधान	४५५-४५८
१९५	तीनो अशुभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका काल	४५८
१९६	तीनो अशुभ लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका काल	४५९
१९७	तीनो अशुभ लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल निरूपण तथा तदन्तर्गत अनेको शंकाओका सप्रमाण समाधान	४५९-४६२
१९८	तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४६२-४६५
१९९	मिथ्यादृष्टि जीवके तेजोलेश्याकी उत्कृष्ट स्थिति अन्तमुहुर्तकम अढाई सागरोपम प्रमाण क्यो नही होती इस शंकाका समाधान तथा इसीसे सम्बन्धित अन्य कई शंकाओका अपुर्व समाधान	४६३-४६५
२००	तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोका काल	४६५
२०१	उक्त दोनो लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोका काल	४६५-४६६
२०२	उक्त दोनो लेश्यावाले संयतासंयत प्रमतसंयत और अप्रमतसंयत जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा काल	४६६
२०३	उक्त जीवोके एक जीवकी अपेक्षा लेश्यापरिवर्तन गुणस्थानपरिवर्तन और मरण इन तीनके द्वारा जघन्य कालका निरूपण	४६६-४७१

२०४	मिथ्यादृष्टी और असयतसम्यग्दृष्टि इन दो गुणस्थानोके तेज और पद्यलेश्यावाले जीवोकी लेश्या और गुणस्थानपरिवर्तन अपेक्षा एक समयकी प्ररुपणा क्यो नही कही इस शंकाका समाधान	४६७-४६८
२०५	तेज और पद्यलेश्याके समान कापीत और नील लेश्याओका भी एक समय पाया जाता है फिर उसे क्यो नही कहा इस शंकाका समाधान	४५८
२०६	तेज या पद्यलेश्याके कालमे एक समय शेष रहनेपर जैसे नीचेके गुणस्थानवाले संयमा समयको प्राप्त होते हे उसी प्रकारसे प्रमतसयत भी संयमासंयम गुणस्थानको क्यो नही प्राप्त होता इस शंकाका समाधान	४७०
२०७	पद्यलेश्याके कालमे विद्यमान कोई प्रमतसयत उस लेश्याके कालक्षयसे तेजोलेश्यासे परिणत होकर दूसरे समयमे अप्रमतसयत क्यो नही होता इस शंकाका समाधान	४६९-४७०
२०८	उक्त प्रकारका जीव मिथ्यात्व आदिक नीचेके गुणस्थानोको क्यो नही प्राप्त हो जाता इस शंकाका समाधान	४७०
२०९	तेज और पद्यलेश्यावाले संयतासयतादि तीन गुणस्थान वाले जीवोका उत्कृष्ट काल	४७१
२१०	शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य उत्कृष्ट कालका निरुपण	४७१-४७२
२११	शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवोका पृथक पृथक काल निरुपण	४७२-४७३
२१२	शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत प्रमतसंयत संयतोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा लेश्यापरिवर्तन गुणस्थान परिवर्तन और मरणकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका निरुपण	४७३-४७५
२१३	तेज पद्य और शुक्ल लेश्या सम्बन्धी एक एक समयके भंगोका निरुपण	४७५
२१४	शुक्ल लेश्यावाले चारो उपशामक चारो क्षपक और सयोगिकेवली काल वर्णन	४७६

	११ भव्यमार्गणा	४७६-४८०
२१५	भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४७६-४८०
२१६	मिथ्यात्वके अनादि ओर अकृत्रिम होनेसे उसका विनाश नहीं होना चाहिए कारण रहित वस्तुका विनाश नहीं होता अतः अज्ञान या कर्मबन्धका विनाश नहीं होना चाहिए इत्यादि अनेक अपूर्व शंकाओका अद्वितीय समाधान	४७६-४८०
२१७	मोक्षका जानेके कारण निरन्तर व्ययशील भव्य राशिका विच्छेद क्यों नहीं होता इस शंकाका समाधान	४७८
२१८	सासादनसम्सगदृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके भव्य जीवोका काल	४८०
२१९	अभव्य जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा काल निरूपण	४८०
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	४८१-४८५
२२०	सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवोमे असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तकके जीवोका काल	४८१
२२१	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे अप्रमतसयत गुणस्थान तकके वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोका काल	४८१
२२२	असंयत और संयतसयत गुणस्थानवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतसयत जीवोका नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्य उत्कृष्ट काल	४८२
२२३	उक्त सम्यग्दृष्टि जीवोका एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण जघन्य और उत्कृष्ट काल	४८३
२२४	प्रमतसयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तकके उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोके नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालोका सोदाहरण निरूपण	४८३-४८४
२२५	सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोका पृथक पृथक काल वर्णन	४८४-४८५
	१३ संज्ञिमार्गणा	४८५-४८६

२२६	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोकानाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४८५
२२७	सासादनगुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके संज्ञी जीवोका काल	४८५
२२८	असंज्ञी जीवोका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४८६
	१४ आहारमार्गणा	
२२९	आहारक मिथ्यादृष्टि जीवाका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल	४८६-४८७
२३०	सासादन गुणस्थान लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके आहारक जीवोका काल	४८७
२३१	अनाहारक मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोका काल	४८७-४८८
२३२	अनाहारक अयोगिकेवली काल	४८८ >